ગુજરાત શૈક્ષણિક સંશોધન અને તાલીમ પરિષદ, ગાંધીનગરના પત્ર-ક્રમાંક
જીસીઈઆરટી/અભ્યાસક્રમ/2012/ 1331-32, તા. 01-02-2012- થી મંજૂર

शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए अलग से
शिक्षक-संस्करण तैयार किया गया है।
उसका उपयोग अवश्य करें।

संस्कृत

कक्षा 8

(प्रथम सत्र)

प्रतिज्ञापत्रम्

भारतं मम देशः।
सर्वे भारतीयाः मम भ्रातरः भगिन्यः च सन्ति।
मम मानसे देशस्पृहा अस्ति। समृद्धिसहितं विविधतापरिपूर्णं तस्य संस्कृतिगौरवम् अनुभवामि।
अहं सदा तत्पात्रं भवितुं यत्नं करिष्यामि।
अहं मम पितरौ आचार्यान् गुरुजनान् च प्रति आदरभावं धारयिष्यामि।
प्रत्येकेन सह शिष्टव्यवहारं च करिष्यामि।
अहं मम देशाय देशबान्धवेभ्यः च मम निष्ठाम् अर्पयामि।
तेषां च कल्याणे समृद्धौ च एव मम सुखम् अस्ति।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

तमसो मा ज्योतिर्गमय

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है।
इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक
मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

निर्माण-संयोजन
डॉ. टी. एस. जोषी   श्री हरेश चौधरी
श्री इकबाल वोरा   श्री चंद्रेश पाल्लीआ

लेखन-संपादन :
श्री नरेन्द्र रावल
श्री कनुभाई करकर
श्री ऋता परमार
श्री परेशाबहन ठाकर

अनुवाद :
डॉ. नंदिता एस. शुक्ला
डॉ. किशोरीलाल कलवार

परामर्शन :
श्री राजेशसिंह एस. क्षत्रिय
श्री महारुद्र के. शर्मा
श्री दिनेशकुमार आई. प्रजापति

चित्रांकन :
श्री मणिलाल राजपूत   श्री बिपिनचन्द्र पटेल
श्री रसिक वाघेला   श्री अशोक पटेल

संयोजक :
डॉ. क्रिश्ना दवे
(विषय-संयोजक : अंग्रेजी)

निर्माण-आयोजन :
श्री हरेन शाह
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन :
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

RTE-2009 तथा NCF-2005 को ध्यान में रखकर समग्र देश में प्राथमिक शिक्षा का अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों तथा समग्र शिक्षा-प्रक्रिया में परिवर्तन हो रहा है। यह परिवर्तन मुख्यतया संबंधित विषयों की हमारी समझ तथा शिक्षा-प्रक्रिया की समझ को लेकर है। इस नए अभ्यासक्रम का मुख्य उद्‌देश्य बालक की सर्जनशीलता, विचार करने की शक्ति, तर्कशक्ति तथा विश्लेषण कौशल को विकसित करना है। इन पाठ्यपुस्तकों में प्रवृत्तियाँ इस प्रकार समायोजित की गई हैं कि प्रवृत्ति के पश्चात् तत्संबंधी चर्चा या चिंतन हो, उपयोजन हो और यह भी देख सकें कि क्या सीखा है। बालकों को अक्सर व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से छोटे या बड़े समूह में काम करने-सीखने का अवसर मिले, ऐसी शिक्षण-प्रक्रिया में सहायक बनें, इस तरह की पाठ्यपुस्तकें बनाने का प्रयत्न किया गया है। अलबत्त नए अभ्यासक्रमानुसार पाठ्यपुस्तक भी तो अंत में स्वयं एक अध्ययन सामग्री मात्र है, लक्ष्य नहीं है। यानी की साधन है, साध्य नहीं है। अतएव पाठ्यपुस्तक स्वयं समग्र शिक्षण का साधन नहीं ही बन सकती, फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रवृत्तिकेन्द्री शिक्षण की यह धारा प्रथमबार प्रायोजित हो रही है। आशा है कि इन पाठ्यपुस्तकों के उपयोग से अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया सरल तथा रोचक बनेगी।

नए अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की समग्र प्रक्रिया में संबंधित विषय के कोर ग्रूप के सदस्यों ने भी समय-समय पर सहयोग दिया है।

एक वर्ष की आजमाइश के बाद समग्र राज्य के लिए तैयार की गई कक्षा 6 से 8 की इन पाठ्यपुस्तकों को क्षतिरहित बनाने का प्रयत्न किया है, फिर भी क्षति रह गई हो, तो ध्यान आकर्षित करने की विनती है। यह मूल गुजराती पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है।

पी. भारती(IAS)
नियामक
दिनांक : 01-01-2020

कार्यवाहक प्रमुख
गांधीनगर

प्रथम संस्करण : 2013, पुनःमुद्रण : 2014, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020
प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से पी. भारती, नियामक
मुद्रक :

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –*

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छः वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, बालक या प्रतिपाल्य के लिए यथास्थिति, शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

*भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

अनुक्रमणिका

क्रम	इकाई का नाम	पृष्ठ-क्रमांक
*	वन्दना	1
1.	चित्रपदानि 1	3
2.	चित्रपदानि 2	7
3.	आत्मश्रद्धायाः प्रभावः	11
4.	एहि सुधीर	15
5.	शीलायाः प्रवासः	18
*	पुनरावर्तनम् 1	24
6.	विनोदपद्यानि	28
7.	सङ्ख्या	31
8.	मम दिनचर्या	37
9.	भाषासज्जता	43
*	पुनरावर्तनम् 2	57

वन्दना

जय जय हे भगवति सुरभारति
तव चरणौ प्रणमामः।
नाद ब्रह्ममयि जय वागीश्वरि
शरणं ते गच्छामः ।। जय ।।
त्वमसि शरण्या त्रिभुवनधन्या
सुरमुनि-वन्दित - चरणा ।
नवरस-मधुरा-कविता-मुखरा
स्मित-रुचि-रुचिराभरणा ।। जय ॥
आसीना भव मानसहंसे
कुन्द-तुहिन-शशि-धवले ।
हर जडतां कुरु बोधि-विकासं

सित-पङ्कज-तनु-विमले ।। जय ।।
ललितकलामयि ज्ञान विभामयि
वीणा-पुस्तक-धारिणि।
मतिरास्तां नो तव पद-कमले
अयि कुण्ठाविषहारिणि ॥ जय ।।

टिप्पणी

सुरभारति वाणी की देवी, सरस्वती **वागीश्वरी** वाणी की देवी **आसीना** बैठी हुई **कुन्द** बेला का फूल **तुहिनः** बरफ **शशि** आस्ताम् **धवला** चन्द्र जैसी सफेद **पङ्कज** कमल **तनुः** शरीर **मतिः** बुद्धि **सितः** सफेद

विशेषः

मतिरासस्ताम् मतिः आस्ताम्

भवान् जानाति किम् ?

- मासे पक्षद्वयं भवति – शुक्लपक्षः, कृष्णपक्षः च।
- सर्पस्य जिह्वाद्वयं भवति।
- त्रयः गुणाः सन्ति – सत्त्वम्, रजः, तमः च।
- चत्वारः आश्रमाः सन्ति – ब्रह्मचर्यम्, गार्हस्थ्यम्, वानप्रस्थम्, संन्यासः च।
- चत्वारः पुरुषार्थाः सन्ति – धर्मः, अर्थः, कामः, मोक्षः च।

1 चित्रपदानि 1

एषः　　　　　　　　सः

एषः शुकः ।

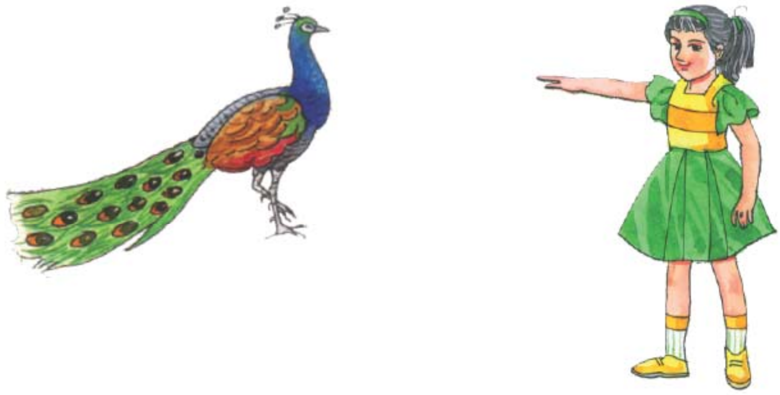

सः मयूरः ।

एषः श्वानः ।

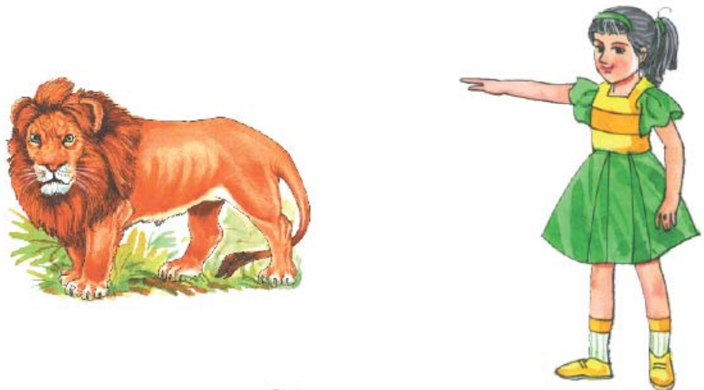

सः सिंहः ।

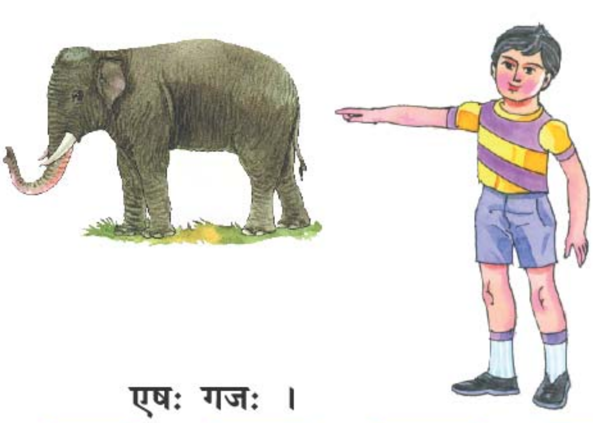

एषः गजः ।

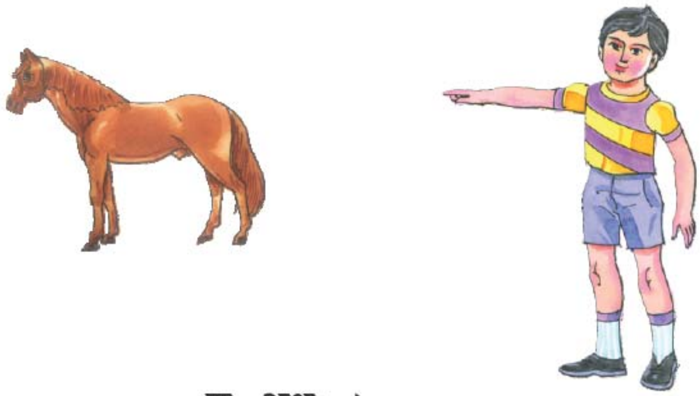

सः अश्वः ।

एषा   सा

एषा बालिका ।   सा प्रतिमा ।

एषा उत्पीठिका ।   सा सञ्चिका ।

एषा गीता ।   सा पूजा ।

एतत्　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　तत्

एतत् वातायनम् ।　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　तत् द्वारम् ।

एतत् पुस्तकम् ।　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　तत् चित्रम् ।

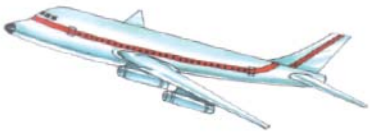

एतत् बसयानम् ।　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　तत् विमानम् ।

अहम्　　　　　　　　　　　　　　त्वम्

अहं शिक्षकः ।

त्वं छात्रः ।

अहं बालिका ।

त्वं बालकः ।

अहं युवकः ।

त्वं युवती ।

2 चित्रपदानि 2

एते

ते

एते गजाः ।

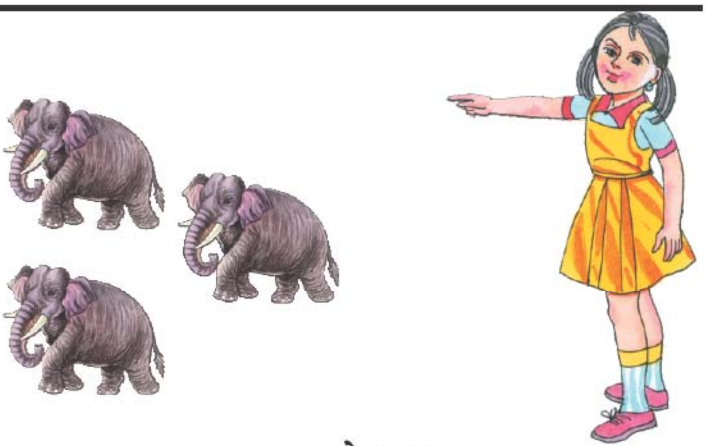

ते गजाः ।

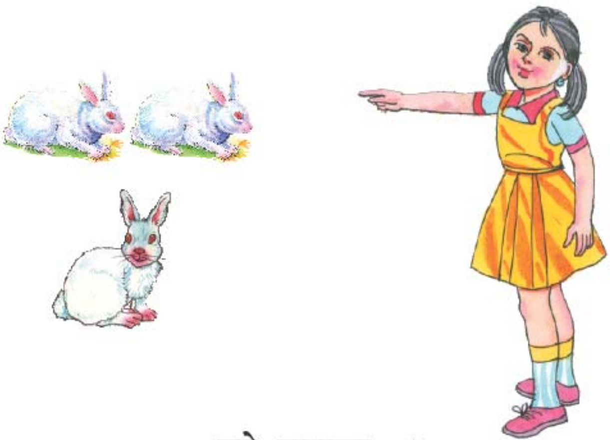

एते शशकाः ।

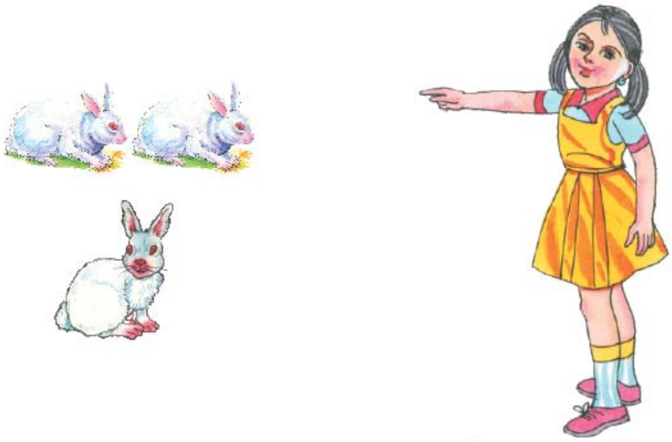

ते शशकाः ।

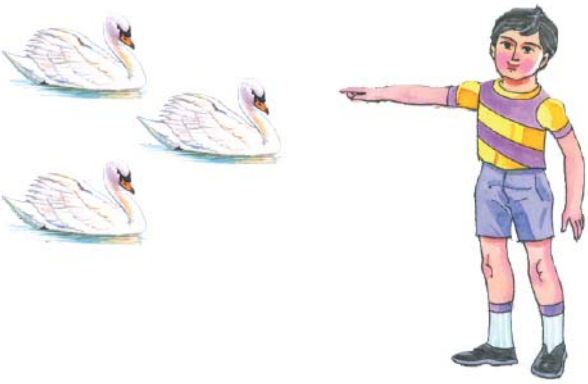

एते हंसाः ।

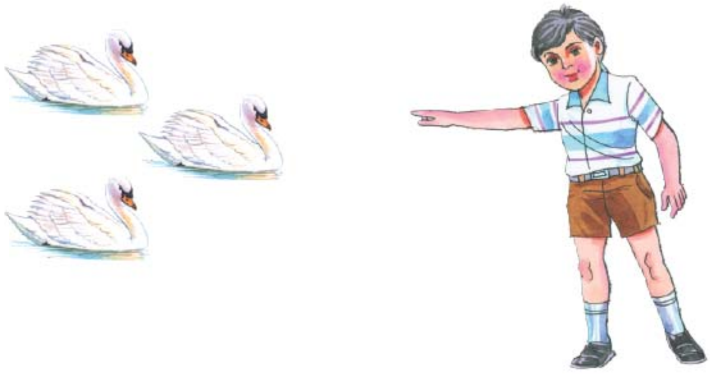

ते हंसाः ।

एताः ताः

एताः मेषाः ।

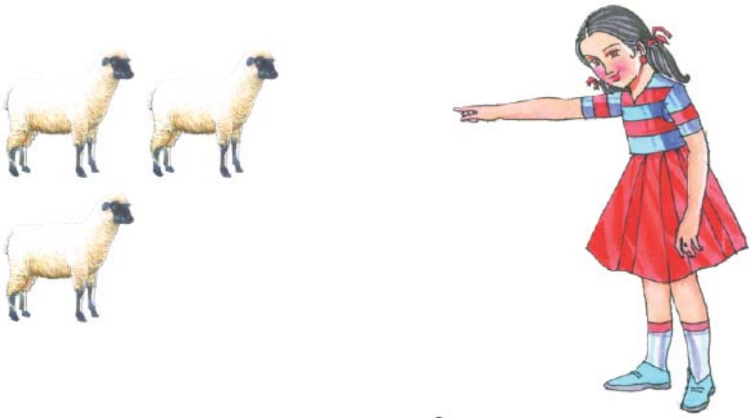

ताः मेषाः ।

एताः बालिकाः ।

ताः महिलाः ।

एताः चटकाः ।

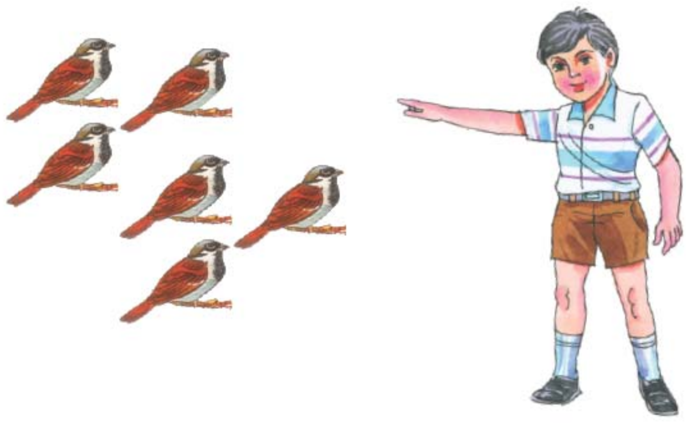

ताः चटकाः ।

एतानि | तानि

एतानि पुस्तकानि ।

तानि पुस्तकानि ।

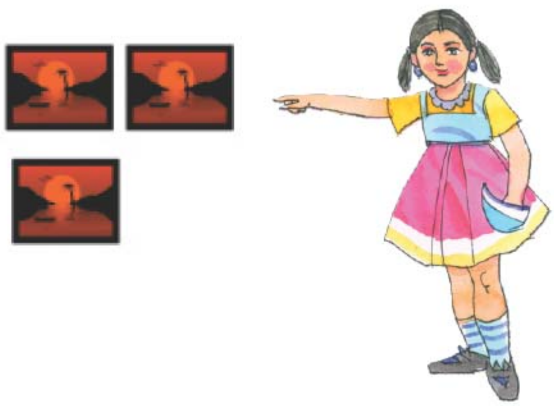

एतानि चित्राणि ।

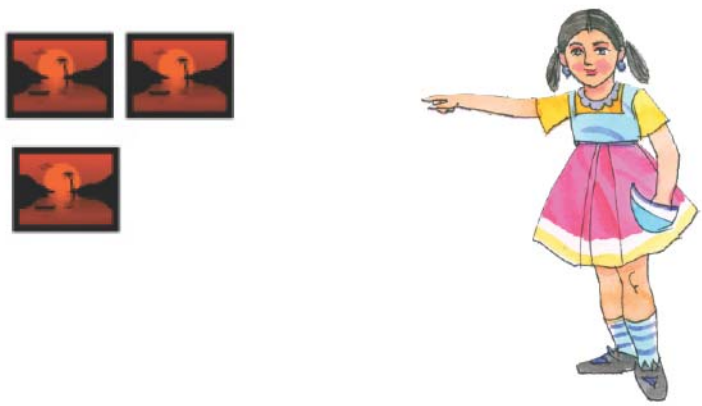

तानि चित्राणि ।

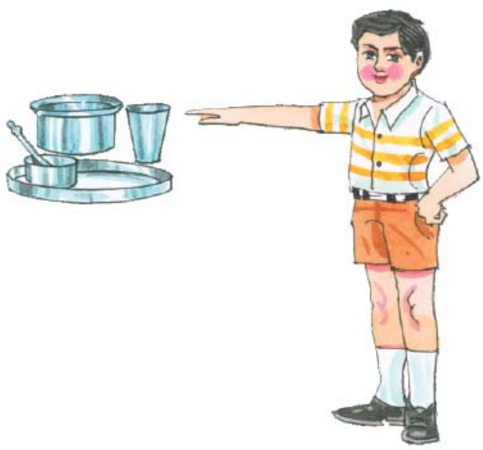

एतानि पात्राणि ।

तानि पात्राणि ।

वयम् | यूयम्

वयं शिक्षिकाः । | यूयं सैनिकाः ।

वयं बालकाः । | यूयं बालकाः ।

वयं महिलाः । | यूयं बालिकाः ।

3 आत्मश्रद्धायाः प्रभावः

एकः बालकः आसीत् । तस्य नाम एकलव्यः आसीत् । सः धनुर्विद्यां पठितुम् इच्छति स्म ।

एकदा सः द्रोणाचार्यस्य समीपम् अगच्छत् अवदत् च, ''गुरुदेव, अहम् अपि धनुर्धरः भवितुम् इच्छामि । कृपया मां स्वीकुरु।'' । आचार्यः प्रत्यवदत्, ''अहं कौरवान् पाण्डवान् च पाठयामि । अहं भवतः शिष्यरूपेण स्वीकारं कर्तुं न शक्नोमि ।'' परन्तु आचार्यं प्रति तस्य श्रद्धा शिथिला न अभवत् ।

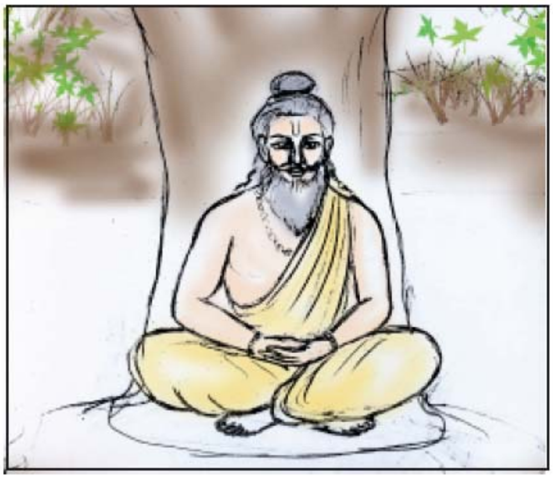

सः आचार्यस्य द्रोणस्य एकां मूर्तिम् अरचयत् । सः प्रतिदिनं मूर्तिम् अनमत् । प्रातःकालात् सायंकालपर्यन्तं धनुर्विद्यायाः अभ्यासम् अकरोत् । शनैः शनैः सः कुशलः धनुर्धरः अभवत् । एकदा तस्मिन् वने गुरुद्रोणः पाण्डवैः कौरवैः च सह आगच्छत् । एकः कुक्कुरः

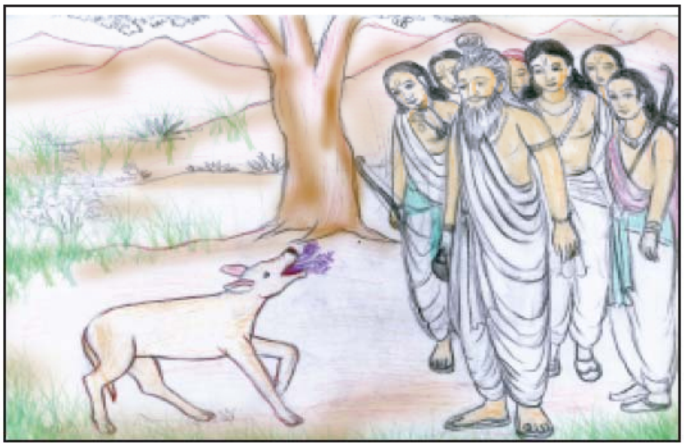

तान् दृष्ट्वा अभषत् । अर्जुनः धनुष्यम् उत्थापयति स्म । तदैव एकलव्यः बाणैः तस्य कुक्कुरस्य मुखम् असीव्यत् द्रोणाचार्यः एतत्

दृष्ट्वा तत्र आगच्छत् तं च अपृच्छत्, "कः तव आचार्यः ।" तदा सः द्रोणाचार्यं तां मूर्तिम् अदर्शयत् ।

एकलव्यः गुरुश्रद्धायाः स्वश्रद्धायाः च प्रतीकम् अस्ति । एकलव्यः अस्मान् शिक्षयति 'स्वयंज्योतिः स्वयंप्रज्ञः भवतु'। यदि अस्मासु आत्मश्रद्धा अस्ति तर्हि काऽपि सिद्धिः दुर्लभा नास्ति ।

अनन्तरम् आत्मश्रद्धायाः बलेन सः श्रेष्ठः धनुर्धरः अभवत् ।

टिप्पणी

पठितुम् पढ़ने के लिए **भवितुम्** होने के लिए **प्रत्यवदत्** प्रति उत्तर दिया **न शक्नोमि** नहीं कर सकता हूँ **भवतः** आपका **शिथिला** ढीली, सुस्त **प्रतिदिनम्** हररोज **शनैः शनैः** धीरे-धीरे **तदैव** तभी **कुक्कुरः** कुत्ता **अनन्तरम्** बाद में **यदि...तर्हि** यदि... तो... **अनमत्** नमन किया **प्रातःकालात्** सुबह से **न अभवत्** नहीं हुआ **उत्थापयति** उठाता है **असीव्यत्** सिल दिया**अस्मान्** हमें

स्वाध्यायः

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चस्वर में उच्चारण कीजिए :

एकलव्यः, धनुर्विद्याम्, द्रोणाचार्यस्य, अगच्छत्, स्वीकुरु, प्रत्यवदत्, शिष्यरूपेण, पर्यन्तम्, उत्थापयति, गुरुश्रद्धायाः, स्वयंज्योतिः, दुर्लभा ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए :

(1) एकलव्यः धनुर्विद्यां पठितुं कस्य समीपम् अगच्छत् ?

(2) एकलव्यः द्रोणं किम् अवदत् ?

(3) द्रोणः एकलव्यं किम् अवदत् ?

(4) एकलव्यः बाणैः किम् अकरोत् ?

(5) द्रोणाचार्यः एकलव्यं किम् अपृच्छत् ?

3. कोष्ठक में दिए शब्दों में से योग्य शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(आचार्यं प्रति, शिक्षयति, अभषत्, द्रोणाचार्यस्य)

(1) एकलव्यः धनुर्विद्यां पठितुं ______________ समीपम् अगच्छत्।

(2) एकलव्यस्य ______________ श्रद्धा शिथिला न अभवत् ।

(3) एकः कुक्कुरः तान् दृष्ट्वा ______________।

(4) एकलव्यः अस्मान् ______________ 'स्वयंज्योतिः स्वयंप्रज्ञः भवतु' ।

4. निम्नलिखित शब्दों के आधार पर वाक्य बनाइए :

(1) धनुर्धरः (2) बालकः (3) शिष्यः (4) कुक्कुरः

(1) ______________

(2) ______________

(3) ______________

(4) ______________

5. नीचे दिए गए सही विधानों के सामने 'आम्' और गलत विधानों के सामने 'न' लिखिए :

(1) एकलव्यः ईश्वरश्रद्धायाः प्रतीकम् अस्ति ।

(2) एकलव्यः बाणैः कुक्कुरस्य मुखम् असीव्यत् ।

(3) आचार्यं प्रति एकलव्यस्य श्रद्धा शिथिला न अभवत् ।

(4) द्रोणाचार्यः एकलव्यस्य शिष्यरूपेण स्वीकारं कर्तुं न शक्नोति ।

6. **उदाहरण में दर्शाए अनुसार कोष्ठक में दिए गए धातुओं के रूप बनाकर खाली जगह में लिखिए :**

उदाहरण

सः धनुर्विद्यां ______________ इच्छति । (पठ्)

सः धनुर्विद्यां पठितुम् इच्छति ।

(1) सः अध्यापकः ______________ इच्छति । (भू)

(2) अहं रोटिकां ______________ इच्छामि । (खाद्)

(3) भवान् उद्याने ______________ इच्छति वा । (चल्)

7. **धनुष का चित्र बनाइए :**

वाहनम्

- **शकटम्** बैलगाड़ी
- **वायुयानम्** हवाईजहाज (विमान)
- **द्विचक्रिका** साइकिल
- **जलयानम्** समुद्री जहाज

4 एहि सुधीर

एहि सुधिर ! एहि सुविक्रम !
खेलनाङ्गणं गच्छाम ।
धावन–कूर्दन–चलनैः खेलैः
वज्रकायतां विन्दाम ।।

एहि सुशीले ! एहि मृणालिनि !
पुष्पवाटिकां गच्छाम ।
विविधैः कुसुमैर्विधाय मालां
विघ्नविनाशकमर्चाम ।।

एहि दिनेश ! प्रणव ! गणेश !
ज्ञाननिधिं सञ्चिनुयाम ।
एहि शारदे ! गिरिजे ! वरदे
ज्ञानवारिधौ विहराम ।।

तन्वा मनसा हितं चरन्तः
सदा गुरून् अनुगच्छाम ।
भारतमातुः सेवासत्कारः
देशहितार्थं जीवाम ।।

– जनार्दन हेगडे

टिप्पणी

एहि आओ **खेलनाङ्गणम्** खेल का मैदान **गच्छाम** जाएँ **कूर्दन** कूदना **वज्रकायता** वज्रजैसा मजबूत शरीर **पुष्पवाटिका** बगीचा **विधाय** बनाकर **ज्ञाननिधिः** ज्ञान का खजाना **सञ्चिनुयाम** प्राप्त करें **ज्ञानवारिधिः** ज्ञान का सागर **अर्चाम** पूजन करें **गिरिजे** हे पर्वत पुत्री (हे पार्वती) **विहराम** घूमें, विहार करें **चरन्तः** आचरण करते हुए

विशेषः

कुसुमैर्विधाय – कुसुमैः विधाय **विघ्नविनाशकमर्चाम** – विघ्नविनाशकम् अर्चाम

स्वाध्यायः

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चस्वर में उच्चारण कीजिए :

सुविक्रम, खेलनाङ्गणम्, वज्रकायताम्, मृणालिनि, कुसुमैर्विधाय, सञ्चिनुयाम, ज्ञानवारिधौ, अनुगच्छाम ।

2. दी गई काव्यपंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(1) एहि सुधीर !____________________ विन्दाम ।।

(2) तन्वा ____________________ जीवाम ।।

(3) एहि दिनेश ____________________ विहराम।।

3. निम्नलिखित उदाहरण जैसे क्रिया आधारित शब्द काव्य में से खोज करके लिखिए :

उदाहरणम् : गच्छाम __________, __________

__________, __________

__________, __________

4. निम्नालिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में दीजिए :

(1) वज्रकायतां कथं विन्दाम ?

(2) कुसुमैः कं अर्चाम ?

(3) कस्य हितार्थं जीवाम ?

(4) सदा कान् अनुगच्छाम ?

5. उदाहरण के अनुसार लिखिए :

उदाहरणम् : गच्छ् – गच्छाम

नय् – ____________ पिब् – ____________

अनुगच्छ् – ____________ विन्द – ____________

6. कक्षा 6-7 में आनेवाले भारतमाता के अन्य गीतों को खोजकर उनका गान कीजिए।

7. भारतमाता का मानचित्र बनाइए।

8. आप जो खेल खेलते हैं उन खेलों के नाम लिखिए।

ज्ञातव्यम्

- संस्कृतसाहित्यक्षेत्रे अप्रतिमं योगदानाय 'वाल्मीकिपुरस्कारः' दीयते।
- अस्माकं राजमुद्रायाम् अङ्कितः 'सत्यमेव जयते' इति मुद्रालेखः मुण्डकोपनिषदि अस्ति।

5 शीलायाः प्रवासः

सविता : (भ्रमणभाषं धृत्वा) हरि ॐ।

शिक्षिका : हरिः ॐ । कः वदति ?

सविता : अहं शीलायाः माता वदामि । प्रवासे मम पुत्री अस्ति ।

शिक्षिका : आम् अस्ति । किञ्चित् कार्यम् अस्ति वा ?

सविता : आम्, अहं तया सह वार्तालापं कर्तुम् इच्छामि । (शिक्षिका शीलां प्रति भ्रमणभाषं प्रेषयति ।)

शीला : अम्ब, कथम् अस्ति सर्वं कुशलं वा ?

सविता : आम्, अहं कुशलिनी। भवत्याः प्रवासः कथं प्रचलति ?

शीला : प्रवासः तु सम्यक् प्रचलति। अधुना अहम् अजन्तागुहायाम् अस्मि।

सविता : शोभनम् । तत्र किं किम् अस्ति ?

शीला : अत्र अनेकानि चित्राणि शिल्पानि च सन्ति।

सविता : तत्र कानि चित्राणि सन्ति ?

शीला : भगवत:बुद्धस्य शिल्पं सुन्दरम् अस्ति। अन्यत् च चतुर्मुखस्य हरिणस्य चित्रम् अपि मनोहरम अस्ति । अत्र बहूनि सुन्दराणि चित्राणि अपि सन्ति ।

सविता : पद्मपाणेः चित्रं तत्र अस्ति वा ?

शीला : आम्, अस्ति । अस्माभिः सह मार्गदर्शकः अपि अस्ति ।

सविता : सः किं कथयति ?

शीला : सः बौद्धगुहायाः विषये अस्माभिः सह वार्तालापं करोति । अपि च, गुहायाः इतिहासम् अपिमा कथयति ।

सविता : तेषां स्थानानां कानिचित् छायाचित्राणि आनयतु ।

शीला : अवश्यम् आनेष्यामि ।

सविता : अजन्तातः प्रवासः कुत्र गमिष्यति ?

शीला : अजन्टातः वयं घुष्णेश्वरं, घुष्णेश्वरतः शीरडीं, शीरडीतः त्र्यम्बकेश्वरं, त्र्यम्बकेश्वरतः नासिकं गमिष्यामः ।

सविता : शोभनम्, प्रवासः शिक्षणस्य भागः एव अस्ति । तर्हि सम्यक् रीत्या प्रवासं करोतु । भवती यत् यत् पश्यति तत् सर्वं टिप्पणीपुस्तके लिखतु ।

शीला : आम्, अवश्यं लेखिष्यामि ।

सविता : अपि च, प्रवासस्थानस्य विशेषतां तथा तस्य स्थानस्य इतिहासविषये अपि लिखतु ।

शीला : अवश्यम् । भवतु, नमो नमः।

सविता : नमो नमः।

टिप्पणी

भ्रमणभाषः मोबाइल (फोन) **शीलायाः** शीला का **तस्यै** उसके लिए **अम्ब** हे माता **अधुना** अभी **भवत्याः** आपका (स्त्रीलिंग) **कथम् अस्ति** कैसे हो ? **गुहायाम्** गुफा में **चतुर्मुख** चार मुखवाले का **पद्मपाणेः** पद्मपाणि का, जिसके हाथ में कमल हो उसका **मार्गदर्शकः** मार्गदर्शक, गाइड **सम्यक् रीत्या** अच्छी तरह से **बौद्धगुहायाः** बौद्ध गुफा की **अस्माभिः सह** हमारे साथ **टिप्पणीपुस्तकम्** नोटबुक **आनयतु** लाएँ

स्वाध्यायः

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चस्वर में उच्चारण कीजिए :

भ्रमणभाषः, किञ्चित्, प्रेषयति, सम्यक्, प्रचलति, अजन्तागुहायाम्, चतुर्मुखस्य, पद्मपाणेः, बौद्धगुहायाः, त्र्यम्बकेश्वरम्, घुष्णेश्वरतः, टिप्पणीपुस्तकम् ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में दीजिए :

(1) का दूरभाषं करोति ?

(2) शीला कस्याः पुत्री अस्ति ?

(3) शीला कुत्र गच्छति ?

(4) शीला किं किं पश्यति ?

3. उदाहरण अनुसार दिए गए वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्य में बदलिए :

उदाहरणम् : शीला अजन्तागुहायाम् अस्ति ।

शीला कुत्र अस्ति ?

(1) महेशः उद्याने अस्ति ।

(2) फरिदा वाटिकायाम् अस्ति ।

(3) सुनन्दा शालायाम् अस्ति ।

उदाहरणम् : शीला <u>गृहतः</u> मन्दिरं गच्छति ।

शीला <u>कुतः</u> मन्दिरं गच्छति ?

शीला <u>गृहतः</u> <u>कुत्र</u> गच्छति ?

(1) नरेन्द्रः कार्यालयतः गृहं गच्छति ।

(2) विनयः क्रीडाङ्गणतः वाटिकां गच्छति ।

(3) अलका पालनपुरतः गान्धीनगरं गच्छति ।

4. उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए :

उदाहरणम् : नटराजः चित्रम् । नटराजस्य चित्रम् अस्ति ।

(1) वेदान्तः पुस्तकम् । ______________________

(2) पार्थः कन्दुकः । ______________________

(3) कल्पेशः लेखनी । ______________________

(4) कर्णः कुण्डलम् । ______________________

(5) निसर्गः गृहम् । ______________________

उदाहरणम् : शीला पुस्तकम् ।

शीलायाः पुस्तकम् अस्ति ।

(1) रेखा द्विचक्रिका । ______________________

(2) विद्या प्रभावः । ______________________

(3) कृपा आसन्दः । ______________________

(4) मीना पाठशाला । ______________________

(5) अनीक्षा शाटिका । ______________________

5. निम्नलिखित वाक्यों को संस्कृत भाषा में लिखिए :

(1) आरती जामनगर से राजकोट जाती है। ______________________

(2) हर्षा अमरेली से जूनागढ़ जाती है। ______________________

(3) मिहिर अहमदाबाद से सूरत जाता है। ______________________

(4) कुमार भुज से अहमदाबाद जाता है। ______________________

(5) उषा वडोदरा से पालनपुर जाती है। ______________________

6. आपके गाँव में आनेवाली बस कहाँ से और किन-किन स्थानों से आती है, उसका वर्णन संस्कृत भाषा में कीजिए :

जैसे कि,

लोकयानं हिंमतनगरतः इडरं गच्छति । इडरतः वटपल्लीं गच्छति । वटपल्लीतः भावनगरं गच्छति।

ज्ञातव्यम्

संस्कृत सामयिकानाम् सूचि

नाम	प्रकार	स्थान
• गाण्डीवम्	साप्ताहिक	वाराणसी
• उद्यानपत्रिका	मासिक	आन्ध्रप्रदेश
• अभिनवसंस्कृतम्	वार्षिक	कानपुर
• अनादिवाक्	त्रैमासिक	नई दिल्ली
• अर्वाचीनसंस्कृतम्	त्रैमासिक	नई दिल्ली
• गीर्वाणसुधा	मासिक	मुम्बई
• दिव्यज्योतिः	मासिक	शिमला
• पारिजातम्	मासिक	कानपुर
• संस्कृतसन्देशः	दैनिक	वडोदरा
• साम्प्रतम्	मासिक	अहमदाबाद
• सम्भाषणसन्देशः	मासिक	बेङ्गलुरु
• रसना	मासिक	केरल

पुनरावर्तन 1

1. नीचे दिए गए संवाद दो-दो के समूह में बोलें :

सुधीरः : नमस्कारः ।

सुधाः : नमस्कारः महोदय ।

सुधीरः : भवत्याः नाम किम् ?

सुधाः : मम नाम सुधा । भवतः नाम किम् ?

सुधीरः : मम नाम सुधीरः । भवती किं करोति ?

सुधाः : अहम् अध्यापिका अस्मि । भवान् किं करोति ?

सुधीरः : अहम् अपि अध्यापकः अस्मि ।

2. निम्नलिखित शब्दों का उच्चस्वर में उच्चारण कीजिए :

चरणौ, प्रणमामः, वागीश्वरि, शरण्या, रुचिराभरणा, पङ्कजम्, मतिरास्तां, कुण्ठाविषहारिणि

3. नीचे दिए गए परिच्छेद का शुद्ध स्वर में पठन कीजिए :

(1) जय जय हे ______ प्रणमामः ।।

(2) नादब्रह्म ______ गच्छामः ।।

(3) त्वमसि ______ चरणा ।।

(4) नवरस ______ रुचिराभरणा ।।

(5) हरजडतां ______ विमले ।।

(6) ललितकलामयि ______ धारिणि ।।

4. नीचे दिए गए परिच्छेद का शुद्ध स्वर में पठन कीजिए :

अस्माकं भारतदेशे अनेकाः नद्यः सन्ति । गङ्गा, यमुना, साभ्रमती, नर्मदा इत्यादयः । सर्वासु नदीषु गङ्गा श्रेष्ठा नदी अस्ति । निदाघे अपि तस्याः प्रवाहो न शुष्यति । सा हिमालयात् प्रभवति सागरं प्रति वहति च । प्रयागे गङ्गायाः यमुनायाश्च सङ्गमः भवति । सङ्गमस्थाने स्नानेन जनाः पवित्राः भवन्ति। धन्यं गङ्गादर्शनं, पुण्यं गङ्गाजले स्नानम् ।

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) एकलव्यः किं पठितुम् इच्छति स्म ?

(2) एकलव्यः धनुर्विद्यायाः अभ्यासं कथं कृतवान् ?

(3) एकलव्यः कुक्कुरस्य मुखं कथम् असीव्यत् ?

(4) एकलव्यः अस्मान् किं शिक्षयति ?

6. **नीचे दिए गए विधान वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयोग करके पुनःप्रश्नवाचक वाक्य में लिखिए :**

(1) गङ्गा, यमुना, साभ्रमती, नर्मदा नद्यः भारतदेशे प्रवहन्ति । (काः काः)

(2) गङ्गा श्रेष्ठा नदी अस्ति । (का)

(3) गङ्गा हिमालयात् प्रभवति । (कुतः)

(4) सङ्गमस्थाने स्नानेन जनाः पवित्राः भवन्ति । (कुत्र)

7. **चित्र देखकर वाक्य बनाइए :**

____

____

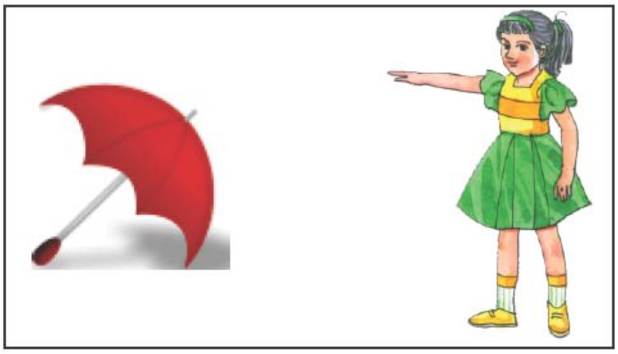

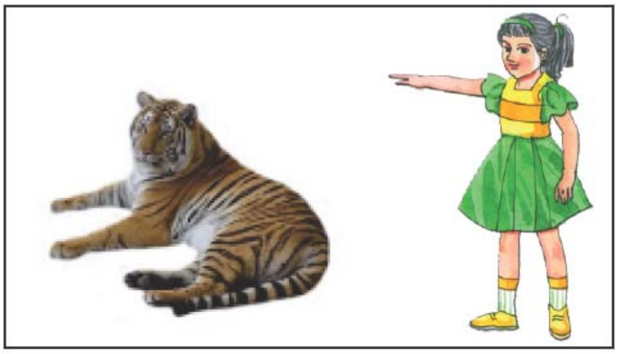

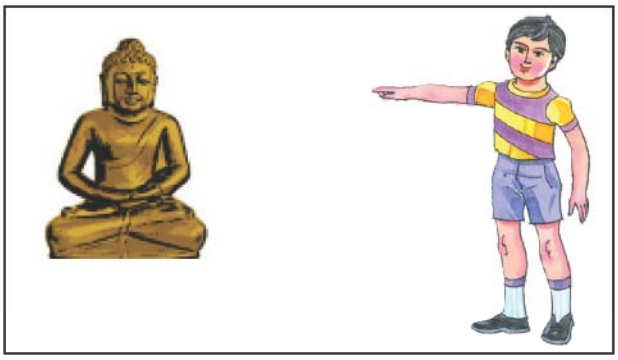

8. उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए :

उदाहरणम् : खेलनाङ्गणं गच्छाम ।

(1) ________________ गच्छाम ।

(2) ________________ गच्छाम ।

(3) ________________ गच्छाम ।

(4) ________________ गच्छाम ।

(5) ________________ गच्छाम ।

भवान् जानाति किम् ?

- पञ्च प्रसिद्ध–महाकाव्यानि सन्ति – रघुवंशम्, कुमारसंभवम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्, ।
- संस्कृतसाहित्यस्य प्रसिद्धः महाकविः कालिदासः ।

6 विनोदपद्यानि

(1) सदा वक्रः सदा क्रूरः कन्याराशिस्थितः।
सदा पूजामपेक्षते नित्यं जामाता दशमो ग्रहः॥

(2) टका धर्मः टका कर्म टका हि परमं तपः ।
यस्य हस्ते टका नास्ति हाटके टकटकायते ।।

(3) घटं भिन्द्यात् पटं छिन्द्यात् कुर्याद्रासभारोहणम् ।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् ।।

(4) उष्ट्राणां हि विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभाः ।
परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूपम् ! अहो ध्वनिः ।।

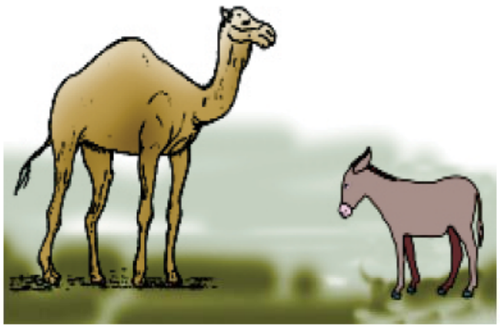

(5) कन्या वरयते रूपं माता वित्तं पिता श्रुतम् ।
बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नमितरे जनाः ।।

(6) वैद्यराज नमस्तुभ्यं यमराजसहोदर ।
यमस्तु हरति प्राणान् वैद्यः प्राणान् धनानि च ।।

टिप्पणी

वक्री टेढ़ा, वक्र **जामाता** जमाई, दामाद **हाटके** बाजार में **रासभः** गधा **कन्याराशिस्थितः** कन्या राशि में रहा हुआ **गर्दभः** गधा **उष्ट्रः** ऊँट **वित्तम्** धन **सहोदरः** सगाभाई **टका** रुपया **टकटकायते** भटकता रहता है **भिन्द्यात्** तोड़ना चाहिए **छिन्द्यात्** फाड़ना, छेदना **पटम्** वस्त्र **श्रुतम्** विद्या, ज्ञान

विशेषः

कुर्याद्रासभरोहणम् – कुर्यात् रासभ रोहणम् **कुलमिच्छन्ति** – कुलम् इच्छन्ति **मिष्टान्नमितरे** – मिष्टान्नम् इतरे

स्वाध्यायः

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चस्वर में उच्चारण कीजिए :

कन्याराशिस्थितः, पूजामपेक्षते, टकटकायते, भिन्द्यात्, कुर्याद्रासभरोहणम्, उष्ट्राणाम्, प्रशंसन्ति, कुलमिच्छन्ति, मिष्टान्नमितरे, नमस्तुभ्यम् ।

2. निम्नलिखित शब्दों की संधि विच्छेद कीजिए :

पूजामपेक्षते, कुलमिच्छन्ति, मिष्टान्नमितरे

3. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए :

कः + अपि   यमः + तु   नमः + तुभ्यम्

4. श्लोकों की पूर्ति कीजिए :

(1) सदा वक्री ______________________

______________________ दशमो ग्रहः ।।

(2) कन्या वरयते ______________________

______________________ जनाः ।।

5. निम्नलिखित शब्दों का अनुलेखन कीजिए :

भिन्द्यात्, प्रशंसन्ति, नमस्तुभ्यम्, उष्ट्राणाम् ।

6. रेखांकित पदों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए पदों का उपयोग करके नए वाक्य लिखिए :

(1) सदा <u>पूजाम्</u> अपेक्षते । (धनम्, सुखम्, सम्मानम्)

(2) कुर्यात् <u>रासभ</u> आरोहणम् । (अश्व, गज, बलीवर्द)

(3) बान्धवाः <u>कुलम्</u> इच्छन्ति (धनम्, वस्त्रम्, विद्याम्)

प्रवृत्ति

- पाठ में दिए गए श्लोकों को विद्यालय के कार्यक्रम में प्रस्तुत कीजिए।
- दिए गए श्लोकों में से किस तरह हास्य प्रकट होता है, उसकी चर्चा कीजिए।
- इस प्रकार के अन्य श्लोक प्राप्त कीजिए और अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

ज्ञातव्यम्

षोडश संस्काराः

(1)	गर्भाधानम्	(9)	चूडाकर्मः
(2)	पुंसवनम्	(10)	विद्यारम्भः
(3)	सीमन्तः	(11)	उपनयनम्
(4)	जातकर्मः	(12)	वेदारम्भः
(5)	नामकरणम्	(13)	केशान्तः
(6)	कर्णवेधः	(14)	समावर्तनम्
(7)	निष्क्रमणम्	(15)	विवाहः
(8)	अन्नप्राशनम्	(16)	अन्त्येष्टिः

सप्तर्षयः

- कश्यपः, गौतमः, अत्रिः, जमदग्निः, भारद्वाजः, वशिष्ठः, विश्वामित्रः च सप्त ऋषयः सन्ति।

7 सङ्ख्या

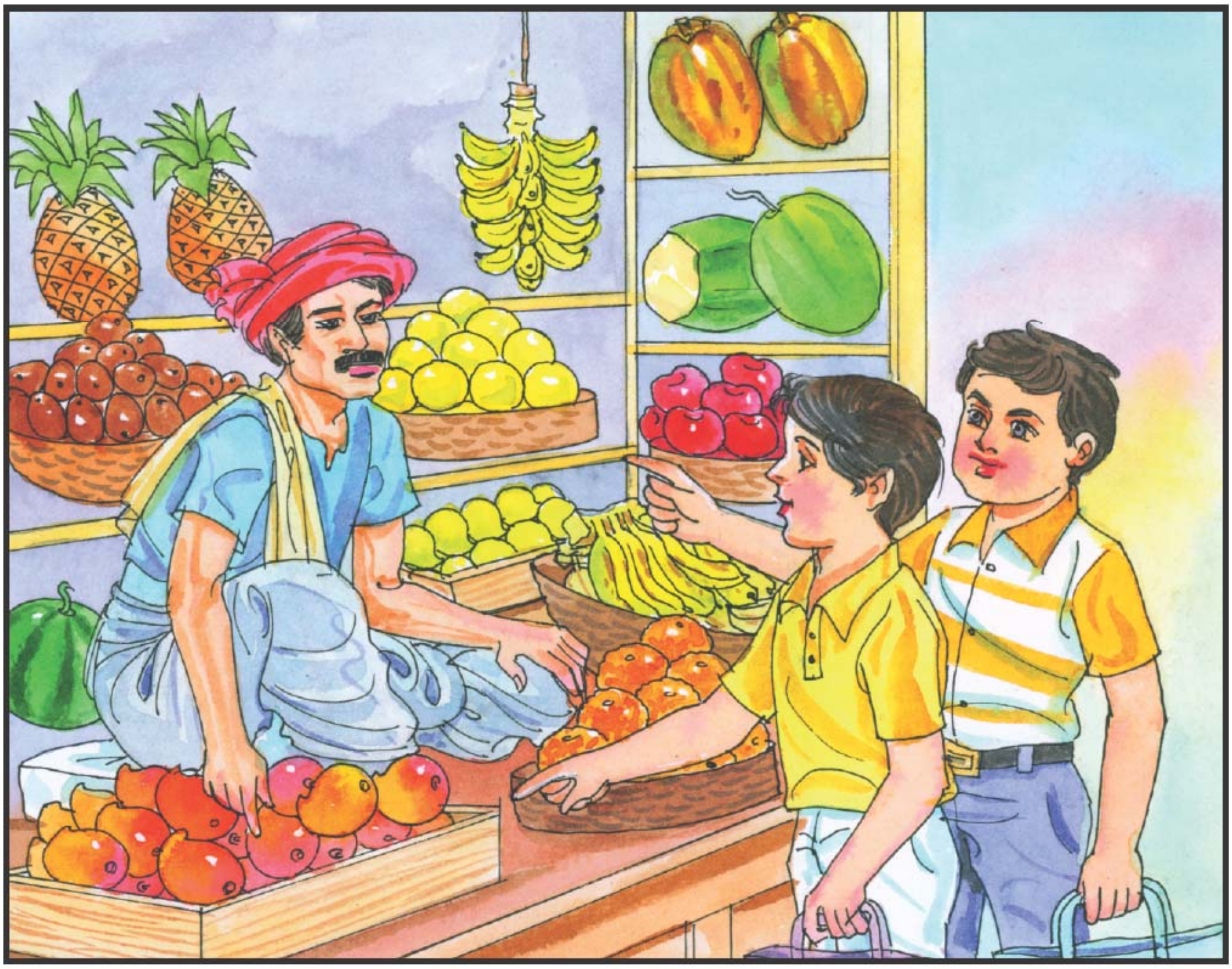

सुरेशः : अहो रमेश ! कुत्र गच्छति ?

रमेशः : आपणं गच्छामि ।

सुरेशः : अहम् अपि आगच्छामि ।

रमेशः : भवान् किं क्रेतुम् इच्छति ।

सुरेशः : अहं फलानि क्रेतुम् इच्छामि ।

रमेशः : पश्यतु, तत्रैव फलविपणी अस्ति । चलतु ।

सुरेशः	:	पञ्चम्यां विपण्यां पक्वानि फलानि सन्ति ।
रमेशः	:	भद्र, आम्रफलानां कियत् मूल्यम् ?
फलविक्रेता	:	पञ्चाशत् रूप्यकाणां दश फलानि ।
रमेशः	:	द्वादशकदलीफलानाम् ?
फलविक्रेता	:	षोडशरूप्यकाणि ।
रमेशः	:	चतुर्णां नारङ्गफलानाम् ?
फलविक्रेता	:	विंशति रूप्यकाणि ।
सुरेशः	:	तर्हि मह्यं त्रिंशत् कदलीफलानि ददातु ।
रमेशः	:	मह्यं द्वादश नारङ्गफलानि ददातु ।
सुरेशः	:	कियत् मूल्यम् ?
फलविक्रेता	:	कदलीफलानां चत्वारिंशत्, नारङ्गफलानां च षष्टिः ।
रमेशः	:	शतरूप्यकाणि स्वीकरोतु ।
फलविक्रेता	:	भवतु ।

टिप्पणी

कदलीफलम् केला **नारङ्गफलम्** संतरा **आम्रफलम्** आम **आपणम्** दुकान **क्रेतुम्** खरीदने के लिए **विपणी** दुकान **पक्वानि** पके हुए **भद्र** महोदय, महाशय **कियत्** कितना **भवतु** भले, अच्छा

स्वाध्यायः

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चस्वर में उच्चारण कीजिए :

आपणम्, क्रेतुम्, तत्रैव, विपण्यां, पञ्चाशत्, रूप्यकाणाम्, चतुर्णाम्, नारङ्गफलानाम्, मह्यम्, शतरूप्यकाणि ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए :

(1) द्वादश कदलीफलानां कियत् मूल्यम् ?

(2) कति नारङ्गफलानां मूल्यं विंशति रूप्यकाणि ?

(3) कः फलविक्रेत्रे शतरूप्यकाणि ददाति ?

(4) रमेशः कति नारङ्गफलानि क्रीणाति ?

(5) त्रिंशत् कदलीफलानां कियत् मूल्यम् ?

3. शब्द को सही अंक के साथ मिलाइए :

	अ	ब
(1)	नवनवतिः	९६
(2)	षट्सप्ततिः	४९
(3)	नवचत्वारिंशत्	९९
(4)	एकाशीतिः	७६
(5)	षण्णवतिः	८१

(क) खाली जगह भरिए :

(1) ______________ कदलीफलानां चतुस्त्रिंशत् रूप्यकाणि।

(2) पञ्च दाडिमानां मूल्यं ______________ रूप्यकाणि।

(3) दश आम्रफलानां मूल्यं ______________ रूप्यकाणि।

(ख) प्रश्न 4 में दिए गए कोष्ठक के आधार पर नीचे दिए गए वाक्य सही हैं या गलत, बताइए :

(1) दश सेवफलानां मूल्यं अष्टनवति रूप्यकाणि । ( )

(2) उपनेत्रस्य मूल्यं पञ्चाशत् रूप्यकाणि । ( )

(3) युतकस्य मूल्यं पञ्च षष्टिः रूप्यकाणि । ( )

4. कोष्ठक के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

फलानि	मूल्यम्	वस्तूनि	मूल्यम्
द्वादश कदलीफलानि	३५	उपनेत्रम्	७५
पञ्च दाडिमफलानि	४०	कर्तरी	४६
दश सेवफलानि	९८	तालम्	६०
द्राक्षाफलानि	४६	घटः	८०
चतुर्विंशतिः आम्रफलानि	१००	युतकम्	६५

प्रश्न :

(1) कस्य मूल्यं पञ्चसप्ततिः रूप्यकाणि अस्ति ?

(2) पञ्च दाडिमानां मूल्यं कति रूप्यकाणि अस्ति ?

(3) तालस्य मूल्यं कति रूप्यकाणि अस्ति ?

(4) षट्चत्वारिंशत् रूप्यकाणि कस्य कस्य मूल्यं अस्ति ?

5. निम्नलिखित अंकों को संस्कृत अंकों और शब्दों में लिखिए :

(1) 68 : ______________________

(2) 74 : ______________________

(3) 100 : ______________________

(4) 88 : ______________________

(5) 57 : ______________________

6. कोष्ठक पूर्ण कीजिए :

	द्विषष्टिः	८२	
८७			त्रिपञ्चाशत्
	द्विनवतिः	८३	
५६			पञ्चचत्वारिंशत्
	सप्तत्रिंशत्	८८	

प्रवृत्ति

(1) १ से १०० तक की संख्या का अंककार्ड तथा संस्कृत शब्दकार्ड बनाइए।

(2) 'कति' और 'कियत्' शब्दों का उपयोग करके पाँच प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

उदाहरणम् : (1) पाण्डवाः कति सन्ति ? (2) घटे कियत् जलम् अस्ति ?

किं भवान् जानाति ?

भारतदेशे द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि सन्ति ।

सङ्ख्याः

१ से १०० तक संख्यावाचक शब्द :

१.	एकम्	२१.	एकविंशतिः	४१.	एकचत्वारिंशत्	६१.	एकषष्टिः	८१.	एकाशीतिः
२.	द्वे	२२.	द्वाविंशतिः	४२.	द्विचत्वारिंशत्	६२.	द्विषष्टिः	८२.	द्वयशीतिः
३.	त्रीणि	२३.	त्रयोविंशतिः	४३.	त्रिचत्वारिंशत्	६३.	त्रिषष्टिः	८३.	त्र्यशीतिः
४.	चत्वारि	२४.	चतुर्विंशतिः	४४.	चतुश्चत्वारिंशत्	६४.	चतुःषष्टिः	८४.	चतुरशीतिः
५.	पञ्च	२५.	पञ्चविंशतिः	४५.	पञ्चचत्वारिंशत्	६५.	पञ्चषष्टिः	८५.	पञ्चाशीतिः
६.	षट्	२६.	षड्विंशतिः	४६.	षट्चत्वारिंशत्	६६.	षट्षष्टिः	८६.	षडशीतिः
७.	सप्त	२७.	सप्तविंशतिः	४७.	सप्तचत्वारिंशत्	६७.	सप्तषष्टिः	८७.	सप्ताशीतिः
८.	अष्ट	२८.	अष्टाविंशतिः	४८.	अष्टचत्वारिंशत्	६८.	अष्टषष्टिः	८८.	अष्टाशीतिः
९.	नव	२९.	नवविंशतिः	४९.	नवचत्वारिंशत्	६९.	नवषष्टिः	८९.	नवाशीतिः
१०.	दश	३०.	त्रिंशत्	५०.	पञ्चाशत्	७०.	सप्ततिः	९०.	नवतिः
११.	एकादश	३१.	एकत्रिंशत्	५१.	एकपञ्चाशत्	७१.	एकसप्ततिः	९१.	एकनवतिः
१२.	द्वादश	३२.	द्वात्रिंशत्	५२.	द्विपञ्चाशत्	७२.	द्विसप्ततिः	९२.	द्विनवतिः
१३.	त्रयोदश	३३.	त्रयस्त्रिंशत्	५३.	त्रिपञ्चाशत्	७३.	त्रिसप्ततिः	९३.	त्रिनवतिः
१४.	चतुर्दश	३४.	चतुस्त्रिंशत्	५४.	चतुष्पञ्चाशत्	७४.	चतुस्सप्ततिः	९४.	चतुर्नवतिः
१५.	पञ्चदश	३५.	पञ्चत्रिंशत्	५५.	पञ्चपञ्चाशत्	७५.	पञ्चसप्ततिः	९५.	पञ्चनवतिः
१६.	षोडश	३६.	षट्त्रिंशत्	५६.	षट्पञ्चाशत्	७६.	षट्सप्ततिः	९६.	षण्णवतिः
१७.	सप्तदश	३७.	सप्तत्रिंशत्	५७.	सप्तपञ्चाशत्	७७.	सप्तसप्ततिः	९७.	सप्तनवतिः
१८.	अष्टादश	३८.	अष्टात्रिंशत्	५८.	अष्टपञ्चाशत्	७८.	अष्टसप्ततिः	९८.	अष्टनवतिः
१९.	नवदश	३९.	नवत्रिंशत्	५९.	नवपञ्चाशत्	७९.	नवसप्ततिः	९९.	नवनवतिः
२०.	विंशतिः	४०.	चत्वारिंशत्	६०.	षष्टिः	८०.	अशीतिः	१००.	शतम्

''हसामः''

''अद्य पाठः अस्ति इत्यस्य भविष्यत्कालरूपं किम् ?''

''श्वः विरामः भविष्यति इति ।''

''कथम् एतत् ?''

''यतः श्वः रविवासरः।''

8 मम दिनचर्या

एषा का ?

एषा घटी।

कः समयः ?

घटीं दृष्ट्वा उपर्युक्त रिक्तस्थानेषु समयं लिखत।

6:05	11:10	7:55	6:50
पञ्चाधिकषड्वादनम्	दशाधिक-एकादशवादनम्	पञ्चोन-अष्टवादनम्	दशोनसप्तवादनम्

कः समयः ?

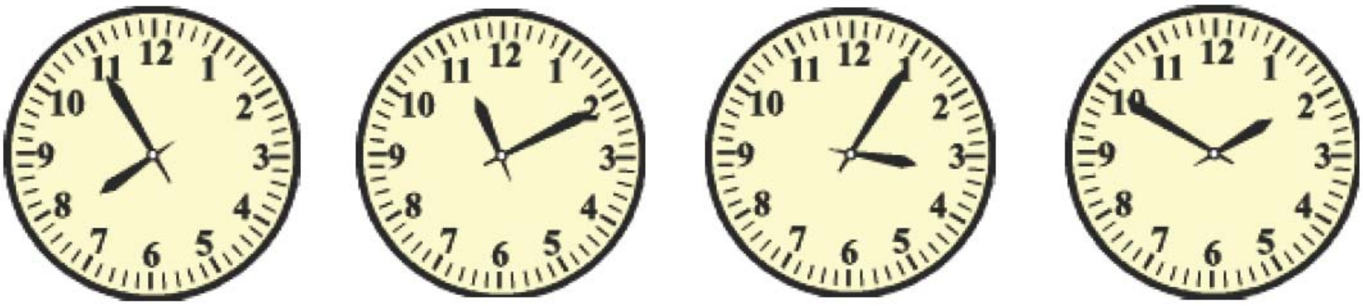

मम दिनचर्या

अहं प्रतिदिनं षड्वादने उत्तिष्ठामि । षड्वादनतः सार्धषड्वादनपर्यन्तं दन्तधावनं स्नानं च करोमि । सार्धषड्वादनतः सप्तवादनपर्यन्तं योगासनं करोमि। तदनन्तरं दुग्धं पिबामि अल्पाहारं च करोमि।

मम माता गृहकार्यं करोति । अहं तां साहाय्यं करोमि । नववादनतः दशवादनपर्यन्तम् अध्ययनं करोमि सार्ध-एकादशवादने भोजनं करोमि । सपादद्वादशवादने विद्यालयं गच्छामि । तत्र अहं विविधान् विषयान् पठामि ।

सायं षड्वादने अहं गृहम् आगच्छामि । सपादषड्वादनतः सपादसप्तवादन-पर्यन्तम् अहं क्रीडामि । तदनन्तरम् अहं सायं प्रार्थनां करोमि । सार्ध-सप्तवादनतः सार्ध-अष्टवादनपर्यन्तं पुस्तकं पठामि । सार्ध-अष्टवादने भोजनं करोमि । नववादनतः सार्धनववादनपर्यन्तं दूरदर्शनं पश्यामि । सार्धनववादनतः दशवादनपर्यन्तं जनन्या तातेन च सह वार्तालापं करोमि । दशवादने शयनं करोमि ।

टिप्पणी

तः से **पर्यन्तम्** तक **उत्तिष्ठामि** उठता हूँ **दन्तधावनम्** दाँत साफ करना, दातून करना **दुग्धम्** दूध **अल्पाहारः** नास्ता **दूरदर्शनम्** टेलीविजन **जननी** माता **तातेन सह** पिता के साथ

स्वाध्यायः

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चस्वर में उच्चारण कीजिए :

उत्तिष्ठामि, षड्वादनतः, दन्तधावनम्, तदनन्तरम्, जनन्या, वार्तालापम् ।

2. अपनी दिनचर्या से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) भवान् कदा उत्तिष्ठत्ति ?

(2) भवती कति वादने प्रार्थनां करोति ?

(3) भवान् कदा विद्यालयं गच्छति ?

(4) भवती कदा क्रीडति ?

(5) भवान् कति वादने गृहकार्यं करोति ?

3. **कोष्ठक के आधार पर वाक्य बनाइए :**

अ	ब	क
प्रातः	षड्वादने नववादने	अल्पाहारम् उत्थानम्
मध्याह्ने	द्वादशवादने	पठनम्
सायम्	षड्वादने सप्तवादने	भोजनम् कथाश्रवणम्
रात्रौ	अष्टवादने दशवादने	अध्ययनम् शयनम्

4. **चित्र देखकर समय का निर्देश करके वाक्य लिखिए :**

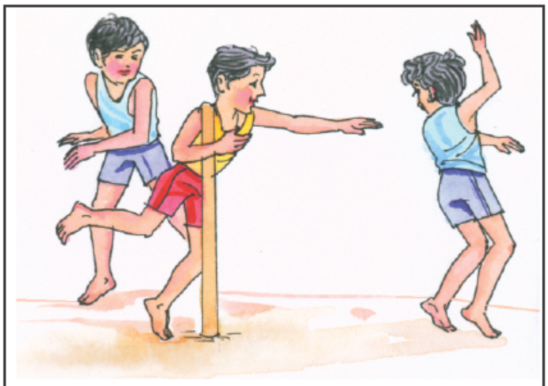

____

____

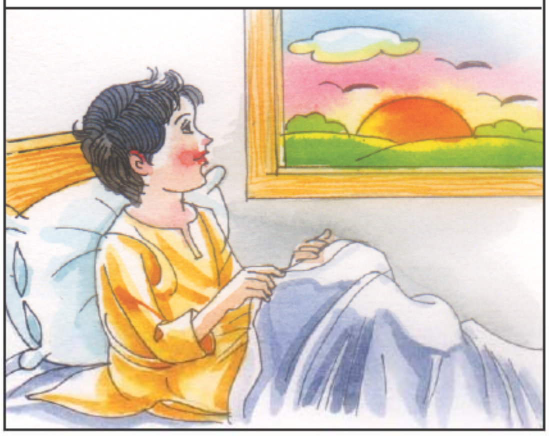

____

____

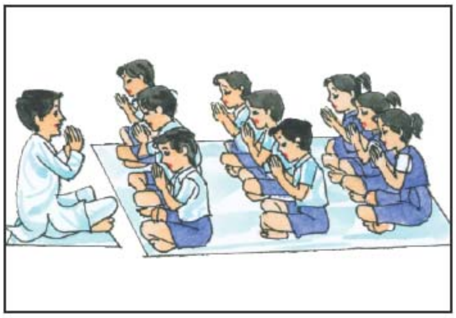

छात्राः एकादशवादने प्रार्थनां कुर्वन्ति ।

5. **उदाहरण के अनुसार अपनी दिनचर्या के आधार पर वाक्य बनाइए :**

उदाहरण : अहं प्रातः षड्वादनतः सप्तवादनपर्यन्तं नित्यक्रियां करोमि ।

(1) अहं ______________________ योगाभ्यासं करोमि ।

(2) अहं प्रातः नववादनतः सार्धनववादनपर्यन्तं ______________________ करोमि ।

(3) अहं ______________________ अध्ययनं करोमि ।

(4) अहं सायं षड्वादनतः सप्तवादनपर्यन्तं ______________________ करोमि ।

6. उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए :

बस का समयपत्रक		
रूट	**आगमन**	**प्रस्थान**
उपलेटा – राजकोट	९:००	९:१०
पोरबन्दर – अहमदाबाद	१०:१०	१०:२०
बाटवा – वडोदरा	१२:१५	१२:३०
जामजोधपुर – जसदण	१५:०५	१५:१०
कोलकी – धोराजी	१६:३०	१६:३५

उदाहरण :

उपलेटा–राजकोट–लोकयानम् 9:00 वादने आगच्छति एवं 9:10 वादने गच्छति ।

7. अपनी दिनचर्या का कथन और लेखन कीजिए।

भवान् जानाति किम् ?

श्रीमद् भगवद्गीतायाम् अष्टादश अध्यायाः सन्ति ।

श्रीमद् भगवद्गीता महाभारते भीष्मपर्वणि अस्ति ।

श्रीमद् भगवद्गीतायां सप्तशतं श्लोकाः सन्ति ।

महाभारतस्य युद्धम् अष्टादश दिनानि पर्यन्तं प्राचलत् ।

चत्वारः मठाः सन्ति–शृंगेरीमठः, शारदामठः, ज्योतिर्मठः, गोवर्धनमठः च ।

गायत्रीमन्त्रस्य मन्त्रद्रष्टा विश्वामित्रः अस्ति ।

9 भाषासज्जता

आइए, संस्कृत भाषा के अध्ययन हेतु कुछ समझ विकसित करने के लिए यहाँ प्रयास करें :

प्रवृत्ति **1.** दोनों होठ एक दूसरे को स्पर्श न करें, इस तरह नीचे दिए गए शब्दों का पठन कीजिए :

मनोजः, पठति, भारतम्, फलम्, बभूव

प्रवृत्ति **2.** जीभ दाँत को स्पर्श न करे इस तरह नीचे दिए गए शब्दों का पठन कीजिए :

तत्परः, ददाति, धनम्, पन्थाः

क्या इन शब्दों का पठन किया जा सका ? नहीं न ? किसलिए ? विचार कीजिए। चर्चा कीजिए। कारण खोजकर नोटबुक में लिखिए। उसकी चर्चा कीजिए और उसके आधार पर यहाँ दिए गए कोष्ठक को समझने का प्रयास करें :

वर्णस्थानानि

स्थान	स्वर			व्यंजन							
	घोष			अघोष		घोष				अघोष	घोष
	ह्रस्व	दीर्घ	संधि दीर्घ							ऊष्माक्षर	ऊष्माक्षर
कंठ	अ	आ	ए–	क्	ख्	ग्	घ्	ङ	अंतस्थः		ह्
तालव्य	इ	ई	ऐ कंठ्य तालव्य	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	य्	श्	
मूर्धन्य	ऋ	ऋ		ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	र्	ष्	
दंत्व	लृ			त्	थ्	द्	ध्	न्	ल्	स्	
ओष्ठ्य	उ	ऊ	कंठ्य ओष्ठय ओ औ	प्	फ्	ब्	भ्	म्	व् दंतोष्ठ्य		

आप समझ गए होंगे कि निश्चित वर्णों का उच्चारण करने के लिए मुख के आन्तरिक अवयवों का उपयोग होता है। प्रत्येक वर्ण का उच्चारण स्थान अलग-अलग है। ये उच्चारण स्थान, स्वर, व्यंजन आदि इस कोष्ठक में दिए गए हैं। इस कोष्ठक का अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि किन मूलाक्षरों का उच्चारण करने के लिए मुख के मुख्य किस अवयव की जरूरत पड़ती है।

इस कोष्ठक का अध्ययन करने से पता चलता है कि उसमें 33 व्यंजन और 13 स्वरों का समावेश हुआ है। संस्कृत भाषा में इनके उपरान्त अन्य स्वर और व्यंजन समाविष्ट थे, परन्तु प्रशिष्ट संस्कृत भाषा में यहाँ दर्शाए गए वर्णों का विशेष उपयोग होता है।

प्रवृत्ति

ऊपर दिए गए कोष्ठक के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) कंठ्य उच्चारण स्थानवाले मूलाक्षर लिखिए, उनके स्वर और व्यंजन अलग कीजिए।

(2) तालव्य उच्चारण स्थानवाले मूलाक्षर लिखिए, उनके स्वर और व्यंजन अलग कीजिए।

(3) मूर्धन्य उच्चारण स्थानवाले मूलाक्षर लिखिए, उनके स्वर और व्यंजन अलग कीजिए।

स्वाध्यायः

1. निम्नलिखित शब्दों को सुन्दर अक्षर में लिखिए :

भद्रम्, नृपः, उत्तुङ्गः, भविष्यति, चञ्चलः, शङ्करः ।

2. निम्नलिखित वर्णों के उच्चारण स्थान बताइए :

क्, ख्, ग्, घ्

प्, फ्, ब्, भ्

ट्, ठ्, ड्, ढ्

वाक्यरचना :
- राकेशः क्रीडति ।
- विपुलः पुस्तकं पठति ।
- मम माता गायति ।
- दया फलं ददाति ।

ऊपर लिखे हुए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। किसी भी वाक्य में नाम तथा क्रियापद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद होते हैं। वाक्य के अर्थ का आधार इन दो पदों पर होता है।

वाक्य में संज्ञा क्रियापद के साथ विविध संबंध से जुड़ती है। इस प्रकार का संबंध जोड़ने का काम विभक्तियाँ करती हैं। इस दृष्टि से विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न पदों को जोड़नेवाली कड़ियाँ हैं।

संज्ञापद क्रियापद के साथ छः प्रकार के संबंधों से छः विभक्तियों द्वारा जुड़ता है। इसके उपरान्त किसी को बुलाने या संबोधित करने के लिए संबोधन विभक्ति का उपयोग होता है। षष्ठी विभक्ति अर्थात् संबंध विभक्ति ऐसी होती है कि जो एक संज्ञापद का दूसरे संज्ञापद के साथ संबंध जोड़ती है।

विभक्ति का परिचय :

विभक्ति का नाम		क्या सूचित करती है	उदाहरण
प्रथमा	कर्ता	क्रिया करनेवाला, कर्ता	गजः - हाथी
द्वितीया	कर्म	क्रिया का कर्म	गजम् - हाथी को
तृतीया	करण	क्रिया का साधन	गजेन - हाथी से
चतुर्थी	सम्प्रदान	क्रिया जिसके लिए हुई हो वह	गजाय - हाथी के लिए
पञ्चमी	अपादान	जिस स्थान से अलग होता हो वह	गजात् - हाथी से (अलग होने के अर्थ में)
षष्ठी	संबंध	नाम का जिसके साथ संबंध हो वह	गजस्य - हाथी की, हाथी का, हाथी के
सप्तमी	अधिकरण	जिसके आधार पर क्रिया होती है वह	गजे - हाथी में, हाथी पर
सम्बोधन	सम्बोधन	जिससे संवाद करना हो	हे गज! हे हाथी!

उपर्युक्त विभक्ति-कोष्ठक के अध्ययन द्वारा संस्कृत वाक्य सरलता से समझा जा सकता है। इस कोष्ठक की मदद से भिन्न-भिन्न विभक्ति का उपयोग हुआ हो, ऐसे वाक्य पाठ्यपुस्तक में से खोजकर लिखिए।

रामः, बालः, नृपः, शाला, लता, माला, वनम्, पुस्तकम्, धनम् ।

उपर्युक्त संज्ञाओं को पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग संज्ञा में विभाजित कीजिए। संस्कृत भाषा में कुछ संज्ञा के अन्त में स्वर होता है, इसलिए ऐसी संज्ञाओं को स्वरान्त संज्ञा और अन्त में व्यंजनयुक्त संज्ञा को व्यंजनान्त संज्ञा कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर वन, बाला, शाला आदि स्वरान्त संज्ञाए हैं, जबकि भगवत्, वाक्, मरुत् आदि व्यंजनान्त संज्ञाएँ हैं।

संस्कृत भाषा में प्रत्येक संज्ञा की विभक्ति एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में होती है। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए। प्राय: जिन रूपों का विशेष उपयोग होता है वे गहरे रंग के अक्षरों में हैं, उन्हें ध्यान में रखिए।

राम (अकारान्त पुल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**रामः**	रामौ	**रामाः**
द्वितीया	**रामम्**	रामौ	**रामान्**
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	**रामस्य**	रामयोः	**रामाणाम्**
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

राम – अ कारान्त पुल्लिंग संज्ञा है, इसके रूप की तरह ही बाल, नृप, मकर के रूप बनाइए।

बाला (आकारान्त स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**बाला**	बाले	**बालाः**
द्वितीया	**बालम्**	बाले	**बालाः**
तृतीया	बालया	बालाभ्याम्	बालाभिः
चतुर्थी	बालायै	बालाभ्याम्	बालाभ्यः
पञ्चमी	बालायाः	बालाभ्याम्	बालाभ्यः
षष्ठी	**बालायाः**	बालयोः	**बालानाम्**
सप्तमी	बालायाम्	बालयोः	बालासु
सम्बोधन	हे बाले	हे बाले	हे बालाः

इसी तरह से 'शाला', 'माला', 'सीता' के रूप 'बाला' की तरह बनाइए।

वन (अकारान्त नपुंसकलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**वनम्**	वने	**वनानि**
द्वितीया	**वनम्**	वने	**वनानि**
सम्बोधन	हे वन	हे वने	हे वनानि

शेष विभक्ति के रूप पुल्लिंग के अनुसार ही होते हैं।

इसी प्रकार 'पुस्तक', 'फल' तथा 'पात्र' के रूप 'वन' के रूप के समान बनाइए।

ऊपर लिखे हुए रूपों को याद करके उसी अनुसार अन्य संज्ञा-पद के रूप तैयार किए जाएँ तो संस्कृत भाषा का व्यावहारिक उपयोग करने में सरलता रहेगी। आप भी ऐसे संज्ञा-पद का उपयोग करके संस्कृत भाषा का सरलता से उपयोग कीजिए।

कभी-कभी संस्कृत में सः, सा, ते, अहम्, मम, तव जैसे रूप देखने को मिलते हैं। क्या आप इन रूपों को पहचानते हैं ? ऐसे रूप जहाँ-जहाँ उपयोग में लिए गए हों, उन वाक्यों को खोज करके अलग से लिखिए।

उदाहरण के तौर पर, सः क्रीडति, अहं खादामि। इत्यादि।

संज्ञा के बदले में जिस रूप का उपयोग होता है उसे सर्वनाम कहा जाता है। जिसमें अस्मद, युष्मदू, कः, एषः, एषा आदि का समावेश होता है।

सर्वनाम का विभक्ति रूप निम्नानुसार होता है :

अस्मद् - मैं

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्

युष्मद् - तुम/तू

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्

अहं जानामि । **तव** गृहं सुन्दरम् अस्ति ।

माला **मम** सखी अस्ति। **अहं त्वां** पश्यामि।

ऊपर लिखे हुए गाढ़े रंग के शब्द सर्वनाम का परिचय देते हैं। पाठ में से इस प्रकार के सर्वनामवाले वाक्यों को खोज करके समझिए।

विभक्तियों के प्रयोग के लिए श्लोक ध्यान से पढ़िए :

(1) रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ।।

यहाँ रामः प्रथमा (कर्ता) विभक्ति में है।

रामम् (राम को) द्वितीया, रामेण (राम से) तृतीया

रामाय (राम के लिए) चतुर्थी, नमः के साथ हमेशा चतुर्थी विभक्ति आती है।

रामात् (राम के पास से) पंचमी, रामस्य (राम की) षष्ठी विभक्ति तथा

रामे (राम पर) सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार, ऊपर लिखे श्लोक को ध्यानपूर्वक पढ़ने से विविध विभक्तियों के रूपों (हे राम) का परिचय मिलता है।

अब नीचे दिए गए श्लोक का अध्ययन कीजिए :

(प्रथमा) (1) अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।
पञ्चकं ना स्मरेत् नित्यं महापातकनाशनम् ।।

(द्वितीया) (2) गङ्गा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा ।
पापं तापं च दैन्यं च हन्ति साधुसमागमः ।।

(षष्ठी) (3) हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।

श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥

(सप्तमी) (4) मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना कुण्डे कुण्डे नवं जलम् ।

देशे देशे नवाचाराः नवा वाणी मुखे मुखे ॥

(सम्बोधन) (5) गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।

नर्मदे सिन्धु कावेरि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥

विभक्तियों को धीरे-धीरे व्यावहारिक उपयोग में लेने से याद रह जाती हैं। श्लोकों के द्वारा तथा पठन एवं बातचीत के माध्यम से विभक्ति के बारे में सरलता से समझा जा सकता है।

निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा-पद और क्रियापद खोजिए :

(1) गन्त्री गच्छति । ______________________

(2) बालकः खादति। ______________________

(3) शिशुः खेलति । ______________________

(4) हंसः तरति । ______________________

(5) गजः चलति । ______________________

ऊपर लिखे हुए छोटे-छोटे वाक्यों में सिर्फ दो ही पद दिखाई देते हैं। जिसमें गन्त्री,बालकः, शिशुः, हंसः और गजः ये संज्ञापद- हैं तथा गच्छति, खादति, खेलति, तरति, चलति ये सब क्रियापद हैं।

क्रियापद :

जो पद क्रिया का होना बतलाता है, उसे क्रियापद कहते हैं।

आइए, अब निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियापद खोजिए और अर्थ बताइए :

(1) अहं नमामि ।

(2) त्वं नमसि ।

(3) नृपः नमति ।

ऊपर लिखे गए वाक्यों में तीनों क्रियापद नमस्कार करने की एक समान क्रिया दर्शाते हैं। पहले वाक्य में क्रिया का कर्ता 'अहम्' उत्तम पुरुष (प्रथम पुरुष) है। दूसरे वाक्य में क्रिया का कर्ता 'त्वम्' मध्यम पुरुष (द्वितीय पुरुष) है। तीसरे वाक्य में क्रिया का कर्ता 'नृपः' अन्य पुरुष (तृतीय पुरुष) है। पुरुष के अनुसार क्रियापद का रूप बदलता है। बदलता है न ? यह आप समझ गए होंगे ऊपर के तीनों वाक्य एकवचन में हैं।

पुरुष और वचन :

हिन्दी में तीन पुरुष हैं। (प्रथम, द्वितीय और अन्य) और वचन दो हैं, एकवचन और बहुवचन। परन्तु संस्कृत में वचन के तीन रूप हैं : एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

धातु गण :

क्रियापद के मूल रूप को धातु कहते हैं।

उदाहरण, 'नमामि', 'नमसि' और 'नमति' इन तीनों क्रियापदों का मूल रूप 'नम्' है। इस मूल रूप को धातु कहते हैं। धातु के मुख्य रूप से दो प्रकार हैं : परस्मैपदी धातु और आत्मनेपदी धातु। जिन धातुओं में परस्मैपद के प्रत्यय लगते हैं, उसे परस्मैपदी धातु तथा जिन धातुओं में आत्मनेपद के प्रत्यय लगते हैं, उसे आत्मनेपदी धातु कहते हैं।

संस्कृत व्याकरण में धातुओं को पहला गण, दूसरा गण, तीसरा गण, चौथा गण, पाँचवाँ गण, छठा गण, सातवाँ गण, आठवाँ गण, नौवां गण, दसवा गण-इस तरह कुल 10 गण अथवा वर्ग में बाँटा गया है। प्रत्येक गण के खास प्रत्यय होते हैं जिसे विकरण प्रत्यय कहा जाता है। जिससे किसी भी गण की धातु अन्य गण की धातु से अलग करके पहचानी जा सकती है।

उदाहरण के तौर पर पहले गण का विकरण प्रत्यय 'अ' है, चौथे गण का विकरण प्रत्यय 'य' है, छट्ठे गण का विकरण प्रत्यय 'अ' है, दसवें गण का विकरण प्रत्यय 'अय' है।

परस्मैपदी धातुओं का अपनी पाठ्यपुस्तक में विशेष रूप से उपयोग हुआ है, जिससे हम वर्तमानकाल के परस्मैपदी प्रत्ययों के अध्ययन से आरंभ करेंगे।

वर्तमानकाल परस्मैपदी प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष (प्रथम पुरुष)	मि	वः	मः
मध्यम पुरुष (द्वितीय पुरुष)	सि	थः	थ
अन्य पुरुष (तृतीय पुरुष)	ति	तः	अन्ति

ऊपर दी गई सारणी के माध्यम से प्रत्यय लगाकर वर्तमानकाल के रूप निम्नांकित सारणी में दिए गए अनुसार बनते हैं उसे पढ़िए और फिर उसी तरह अन्य रूप बनाइए।

विशेष नोट : धातु के रूप बनाते समय धातु को सर्वप्रथम विकरण प्रत्यय लगाने के बाद कालवाचक प्रत्यय रखा जाता है। **उदा., के लिए** नम् + अ + ति = नमति

नम् (पहला गण) प्रणाम करना, नमस्कार करना

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष (प्रथम पुरुष)	नमामि	नमावः	नमामः
मध्यम पुरुष (द्वितीय पुरुष)	नमसि	नमथः	नमथ
अन्य पुरुष (तृतीय पुरुष)	नमति	नमतः	नमन्ति

ऊपर दी गई सारणी के माध्यम से अन्य रूप बनाइए।

पठ् **(पढ़ना)** चल् **(चलना)**

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष			
मध्यम पुरुष			
अन्य पुरुष			

परस्मैपदी (पहला गण) की धातुएँ

हस् (हसति) हँसना

खेल् (खेलति) खेलना

खाद् (खादति) खाना

वह् (वहति) वहन करना

नी (नयति) ले जाना

वस् (वसति) बसना, रहना

धाव् (धावति) दौड़ना

भ्रम् (भ्रमति) घूमना, भ्रमण करना

पा (पिब्-पिबति) पीना

गम् (गच्छ्-गच्छति) जाना

दृश् (पश्य्-पश्यति) देखना

स्था (तिष्ठ्-तिष्ठति) बैठना

अब चौथे गण के नृत् धातु के वर्तमान काल के रूपों का परिचय प्राप्त करें।

नृत् (चौथागण) नाचना, नृत्य करना

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
अन्य पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति

आइए, इसे समझने के बाद अब हम स्वयं अन्य रूप बनाएँ।

कुप् (क्रोधित होना) तुष् (संतुष्ट होना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष			
मध्यम पुरुष			
अन्य पुरुष			

परस्मैपदी के चौथे गण की धातुओं के रूप

क्षुभ् (क्षुभ्यति) क्षोभ करना

मुह् (मुह्यति) मोहित होना

शम् (शाम्यति) शांत होना

श्रम् (श्राम्यति) थकना

आप पहले और चौथे गण की धातुओं के वर्तमान काल के रूपों का परिचय तो प्राप्त कर ही चुके हैं, तो आइए अब छठा गण–परस्मैपद का परिचय प्राप्त करें। छठे गण का विकरण प्रत्यय 'अ' है और प्रथम गण का विकरण प्रत्यय भी 'अ' है। फर्क सिर्फ इतना है कि पहले गण के कुछ धातुओं में विकरण प्रत्यय जोड़ने पर धातुओं में परिवर्तन होता है। जब–कि छठे गण की धातुओं में विकरण प्रत्यय जोड़ने पर कोई परिवर्तन नहीं होता, जिसे याद रखना चाहिए।

लिख (लिखना) छठा गण

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
अन्य पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति

ऊपर दी गई सारणी के माध्यम से स्वयं अन्य रूप बनाने का प्रयत्न करें।

प्रच्छ् – पृच्छ् (पूछना) पृच्छति, स्पृश् स्पर्श करना (स्पृशति)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष			
मध्यम पुरुष			
अन्य पुरुष			

ऊपर दी गई सारणी के माध्यम से इष् - इच्छ् - इच्छा करना, कृष् - जोतना, क्षिप् - फेंकना धातुओं के रूप बनाइए।

जानकारी हेतु : छठे गण की कुछ धातुएँ आदेशयुक्त धातु हैं।

10वाँ गण परस्मैपदः

10वें गण का विकरण प्रत्यय 'अय' है।

कथ् + अय = कथय। उसमें वर्तमानकाल के परस्मैपद प्रत्यय लगाकरर रुप बनते हैं।

आइए, 10वें गण की 'कथ्' धातु के परस्मैपद के वर्तमानकाल के रूप देखें।

कथ् (दसवाँ गण) कहना

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयावः	कथयामः
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथः	कथयथ
अन्य पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति

ऊपर दी गई सारणी के माध्यम से आप स्वयं कुछ अन्य 10वें गण के परस्मैपदी धातुओं के वर्तमानकाल के रूप बनाने का प्रयत्न कीजिए।

पीड् (पीडय) पीड़ित करना रच् (रचना) रचय

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष			
मध्यम पुरुष			
अन्य पुरुष			

संस्कृत भाषा में परस्मैपद के उपरान्त आत्मनेपदी धातुएँ हैं, परन्तु इस स्तर पर इतना अध्ययन पर्याप्त है।

पुनरावर्तन 2

1. कोष्ठक पूरयतु ।(कोष्ठक पूर्ण कीजिए) :

३९			चतुरशीतिः
	अष्टसप्ततिः	८९	
६७			षड्पञ्चाशत्

2. प्रकोष्ठे दत्तेन शब्देन प्रश्नवाक्यं रचयतु ।(कोष्ठक में दिए गए शब्द का उपयोग करके प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए) :

(1) अहम् अष्टवादने शालां गच्छामि। (कति)

(2) संस्कृतपुस्तकस्य मूल्यं षड्रूप्यकाणि अस्ति। (कियत्)

(3) मम मित्रं जामनगरे वसति। (कुत्र)

(4) उद्याने पुष्पं विकसति । (किम्)

(5) राजेशः मन्दिरतः उद्यानं गच्छति । (कुतः, कुत्र)

(6) बालकाः क्रीडनार्थं क्रीडाङ्गणं गच्छन्ति। (किमर्थम्)

3. उदाहरणानुसारं प्रश्नवाक्यं रचयतु । (उदाहरण के अनुसार प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए) :

उदाहरणम् : योगेशः उद्याने अस्ति।

योगेशः कुत्र अस्ति ?

(1) राधा चिकित्सालये अस्ति ।

____ ?

(2) मुस्ताकः पुस्तकालये अस्ति ।

____ ?

(3) चन्द्रा कार्यालये अस्ति ।

____ ?

(4) शिवलालः आपणे अस्ति ।

____ ?

(5) केवलः नदीतटे अस्ति ।

____ ?

3. अधोलिखितं सवादं पठतु एवम् अभिनयेन सह प्रस्तुतं करोतु ।

(निम्नलिखित संवाद पढ़िए और अभिनय के साथ प्रस्तुत कीजिए)

शिक्षकः : विरुद्धार्थ पदानि वदतु ।

छात्रः : अस्तु ।

शिक्षकः : कोपः ।

छात्रः : शान्तता ।

शिक्षकः : धनिकः ।

छात्र:	:	निर्धनः ।
शिक्षक	:	(प्रशंसाभावेन) साधु ।
छात्र:	:	असाधु ।
शिक्षक	:	(कोपेन) रे मूर्ख ।
छात्र:	:	(शान्ततया) श्रीमन्, बुद्धिमन् ।
शिक्षक	:	अलम् । गच्छतु ।
छात्र:	:	अपर्याप्तम् । आगच्छतु ।
शिक्षक	:	(कोपेन) उत्तिष्ठतु ।
छात्र:	:	उपविशतु श्रीमन् ।
शिक्षक	:	निर्गच्छतु इतः ।
छात्र:	:	आगच्छतु ततः ।

4. कोष्ठकं पूरयतु (कोष्ठक पूर्ण कीजिए) :

		अंको में	संस्कृत शब्दों में
1.	२५ x ३ =		
2.	३७ + ४६ =		
3.	९६ + ४ =		
4.	७३ – २५ =		
5.	१८ x ५ =		
6.	३० + १४ =		
7.	७८ + १३ =		
8.	६४ – ५२ =		

5. निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़कर प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए :

अद्य सोमवासरः । ऋता सार्धदशवादने विद्यालयं गच्छति । प्रथमं सा प्रार्थनां करोति । अनन्तरं सा प्रार्थनासभायां सुविचारं कथयति । तत्पश्चात् सा वर्गखण्डे उपविशति । तत्र सा विविधान् विषयान् पठति । विश्रान्तिकाले सा पुस्तकालयं गच्छति । तत्र सा सामयिकं पठति । चतुर्वादने सा कलाखण्डे विविधानि चित्राणि पश्यति । सार्धचतुर्वादने सा क्रीडाङ्गणे क्रीडति । पञ्चवादने विद्यालयतः गृहम् आगमनाय निर्गच्छति ।

उदाहरणम् : ऋता कुत्र गच्छति ।

(1) ____________________

(2) ____________________

(3) ____________________

(4) ____________________

(5) ____________________

(6) ____________________

(7) ____________________